International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 08, August 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

हड़प्पा और प्राचीन मश्र की सभ्यता की धा र्मक अवस्था: एक तुलनात्मक अध्ययन

सुश्री अनुजा कटारा
सहायक आचार्य, इतिहास
मा. ला. व. राजकीय महा वद्यालय, भीलवाड़ा
E-mail: anujakatara60@gmail.com

शोध सारांश

प्राचीन काल से ही धर्म मानव जीवन का महत्वपूर्ण नियामक तत्व रहा है। वश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं के अध्ययन उपरांत यह तथ्य और अ धक प्रमा णक है। जिस समय पश्चिम में मश्र की सभ्यता वकास के चरम स्तर पर थी उसी समय पूर्व में सन्धु घाटी सभ्यता भी अपने उत्कर्ष पर थी। प्रस्तुत शोध पत्र में प्राचीन मश्र तथा सन्धु घाटी (हड़प्पा) सभ्यताओं की धा र्मक परंपराओं, मान्यताओं व वश्वासों का तुलनात्मक अध्ययन कया गया है। दोनों सभ्यताओं में धर्म के स्वरुप, देवमंडल की वशालता, मंदिर संरचनाओं, पुजारी वर्ग का धर्म, समाज और राजनीति में प्रभाव, परलोक की धारणा, दर्शन का अध्ययन कर धर्म का जनसामान्य के जीवन में महत्व और प्रभाव का वश्लेषण कया गया है। दोनों सभ्यताओं के तुलनात्मक अध्ययन उपरांत उनकी समानताओं और असमानताओं को निर्धारित करने वाले तत्वों की ववेचना शोध पत्र में की गई है।

कुंजी शब्द: धर्म, एकेश्वरवाद, बहुदेववाद, फ़राओ, परा मड, अग्निवेदिका, समा ध, ममी, बुक ऑफ डेड,

प्रारंभ से ही धर्म को व्यक्ति, समाज व राज्य की गति व धयों का नियामक-निर्देशक/ धुरी माना गया है। धर्म मूलतः 'धृ' धातु से बना है जिसका अर्थ है 'धारण करना, पास रखना या संचालन करना'।[1] अपने मूल स्वरूप में धर्म से तात्पर्य कसी धा र्मक संप्रदाय वशेष से ना होकर नैतिक मूल्यों के समुच्चय से है। कालांतर में धर्म को एक व शष्ट वश्वास या सद्धांत से जोड़कर देखा जाने लगा। ऐतिहा सक यात्रा क्रम में वश्व के व भन्न हिस्सों में काल, स्थान व स्थानीय संस्कृति के अनुरूप अनेक धर्मों का उद्भव हुआ और सांस्कृतिक, आध्यात्मिक परिस्थितियों में परिवर्तन के फलस्वरुप धर्म में भी परिवर्तन आए।

भारतीय संस्कृति और दर्शन में धर्म एक महत्वपूर्ण संकल्पना रही है, वहीं पश्चिमी जगत में भी धर्म और राजनीति का अटूट संबंध रहा है। प्राचीन सभ्यताओं के उद्भव और वकास के क्रम में धा र्मक मान्यताओं ने मानव को धैर्य और अथक प्रयास करने का संबल प्रदान कया। प्राचीन सभ्यताओं के अध्ययन में धर्म और उससे जुड़ी परंपराओं, मान्यताओं और वश्वासों का अध्ययन तत्कालीन मानव की मनोस्थिति/ मनोवृति के अध्ययन का एक अहम जरिया है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 08, August 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

नदी घाटियों को सभ्यताओं का पालना उ चत ही कहा गया है। मेसोपोटा मया, बेबिलोनिया, चीन, मश्र तथा सन्धु घाटी की सभ्यता इत्यादि अ धकांश सभ्यताएं नदी घाटियों के नजदीक ही फली-फूली। नील नदी का वरदान कही जाने वाली मश्र की सभ्यता प्राचीन उन्नत सभ्यताओं में अ ग्रम स्थान रखती है। वर्ष **1798** में नेपो लयन के मश्र पर अ भयान के दौरान उसके साथ आए वद्वानों ने मस्र के पुरातात्विक अध्ययन की नींव डाली। **1799** में फ्रांसीसी चैंपो लयोन ने रोसेटा के पत्थर पर अं कत लेख को पढ़ा और मस्र की प्राचीन व समृद्ध सभ्यता का पता लगा।[2] जिस समय पश्चिम में मस्र व मेसोपोटा मया की सभ्यता वक सत हो रही थी, उसी समय पूर्व में संधु घाटी व चीन की सभ्यता वक सत हो रही थी।[3]

प्राचीन मस्र व संधु घाटी सभ्यता (हड़प्पा) समकालीन होने के कारण उनकी धा र्मक, सामाजिक, राजनीतिक व दार्शनिक परंपराओं की तुलना स्वाभा वक है। दोनों ही सभ्यताओं के पुरातात्विक उत्खनन में धा र्मक मान्यताओं से जुड़ी वस्तु सामग्री का अपार भंडार मला है। जहां मश्र की ल प का पठन हो चुका है वही संधु ल प आद्दिनांक अपठ्य है। अतः सैंधव धर्म से जुड़ी धा र्मक मान्यताएं मूलतः पुरातात्विक उत्खनन पर आधारित है। उक्त दोनों सभ्यताओं की धा र्मक मान्यताओं, परंपराओं और वश्वासों की तुलना निम्न ल खत आधारों पर की जा सकती है:-

बहुदेववादी/एकेश्वरवादी धर्म:- प्राचीन सैंधववासी अनेक देवी-देवताओं की उपासना करते थे। मातृदेवी, आद्य शव, लंग-योनि की पूजा, अग्नि, जल, पशु, वृक्ष इत्यादि की पूजा प्रच लत होने के प्रमाण मलते हैं। संधु नगरों से प्राप्त नारी मृण्मूर्तियों को मातृदेवी व प्रकृति देवी माना गया है। व भन्न मुहरों पर पीपल के वृक्ष, कूबड़दार बैल, हाथी, गैंडा, हिरण, चीता इत्यादि के अंकन से उनकी प वत्रता व महत्ता का आभास होता है। अतः सैंधव देवमंडल बहुदेववादी था।[4]

दूसरी और सैंधववा सयों के समान मश्रवासी भी बहुदेववादी थे। उनके प्रत्येक नगर, दिन और घंटे के लए अलग-अलग देवता थे। सैंधववा सयों के समान ही मश्रवासी भी सबू (आकाश), हाथोर/नुइत(पृथ्वी), सन (चंद्रमा), रा होरेस (सूर्य), सेत (रे गस्तान), ओ सरिस (नदी तथा मृत्युदेवता) इत्यादि अनेकों देवी-देवताओं की पूजा कया करते थे। दोनों ही सभ्यताओं में प्रकृति का दैवीकरण कया गया। हालां क मश्र के फराओ (शासक) एमेनहोतेप चतुर्थ/ अखनाटन ने बहुदेववाद का खंडन कया और अपने साम्राज्य में केवल एटन (सूर्य देवता) की पूजा ही स्वीकार की। उसने एटनवाद या एकेश्वरवाद की स्थापना का प्रयत्न कया । हालां क उसकी मृत्यु के बाद मश्रवा सयों ने अखनाटन की वचारधारा का परित्याग कर दिया।[5]

मंदिर:- संधु घाटी सभ्यता के उत्खनन में न तो कसी मंदिर के अवशेष प्राप्त हुए हैं और न ही कोई ल खत धा र्मक शास्त्र मला है।[6] कालीबंगा, राखीगढ़ी इत्यादि सन्धु स्थलों

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 08, August 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

पर अग्निवेदियाँ प्राप्त हुई है, जिनमे आहूति की सामग्री के अवशेष प्राप्त हुए हैं। कन्तु ये मंदिरनुमा संरचना से मेल नहीं खाती।

वही मश्र के प्राचीन धर्म के साथ मंदिरों का निर्माण भी जुड़ा है। जिन दिनों थीबिस मस्र की राजधानी थी, उन दिनों करनाक से लक्सार तक अमेन-रे (सूर्य) के वशाल मंदिर बनाए गए। करनाक के वशाल मंदिर का निर्माण फराओ तुतमोस प्रथम ने शुरू करवाया व उसकी बेटी हाथशेपसुत ने इस मंदिर का निर्माण कार्य पूर्ण करवाया। यह निर्माण कार्य पूरे 1800 वर्षों तक चलता रहा।[7] मृत्युपरांत फ़राओ को भी देवतुल्य माना जाता था और उसके शव को रखने के लए वशालकाय परा मडों का निर्माण करवाया गया।

पारलौ कक जीवन में वश्वास:- व भन्न संधु घाटी नगरों से शव-समा धयों से शवों के साथ व वध आभूषण, अस्त्र-शस्त्र, पात्र आदि वस्तुएं रखी मलती हैं। यह वस्तुएं संभवतः मृतक के पारलौ कक जीवन में उपयोग के लए रखी जाती होंगी। इससे प्रतीत होता है क संधुवासी भी पुनर्जन्म में वश्वास रखते थे। मश्रवासी भी जन्म-मृत्यु के आवागमन के सद्धांत में वश्वास रखते थे। उनका वश्वास था क प्रत्येक प्राणी का एक और शरीर होता है जो मरने के बाद भी जी वत रहता है, वे उसे 'का' कहते थे।[8] वे मानते थे क यदि शव को सुर क्षत रखा जावे तो आत्मा उसमें पुनः लौट सकती है। इसी लए शव को व भन्न रालों में भीगे कपड़े में लपेटकर 'ममी' के रूप में सुर क्षत रखा जाता था। ओ सरिस को मश्र वासी परलोक का देवता मानते थे।[9] मश्रवा सयों ने स्वर्ग और नरक की कल्पना भी की।

समा धकरण/ कब्र निर्माण:- संधु सभ्यता के नगर स्थलों से उत्खनन में तीन प्रकार की समा धयां प्राप्त हुई हैं-

1. पूर्ण समा धकरण: जिसमें शव व व वध साम ग्रयों को गर्त में दफना दिया जाता था।
2. आं शक समा धकरण: जिसमें मृत शव को पशु -प क्षयों के खाने के लए छोड़ने के उपरांत शेष बची अस्थियों को दफना दिया जाता था।
3. कलश शवाधान:- जिसमें शवदाह के पश्चात अवशेषों को कलश में रख भू म में गाड़ दिया जाता था।[10]

हड़प्पा स्थल लोथल से कुछ युगल समा धयां भी प्राप्त हुई है।

वही मश्र में शवों को सुर क्षत रखने के लए उन पर व भन्न लेप लगाकर ममी के रूप में सुर क्षत रखने की परंपरा थी। फराओ और अन्य प्रभावशाली व्यक्तियों की अनश्वरता और गौरव को व्यक्त करने के लए वशाल परा मडों का निर्माण कया गया। परा मडों में शवों के साथ उनके उपयोग की सामग्री भी रखी जाती थी। उनका वश्वास था क पारलौ कक जीवन में यह सभी वस्तु-सामग्री मृत व्यक्ति के काम आती है। मस्र के परा मड युग के चौथे वंश के शासक खुफू ने 2650 ईसा पूर्व के लगभग गीजा का परा मड बनवाया था। इस परा मड की ऊंचाई करीब 450 फीट है और यह 13 एकड़ में फैला है।[11] परा मडों में मृतकों की पुस्तक "द बुक ऑफ़ डेड" भी रखी जाती थी।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 08, August 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

पुजारी/पुरोहित वर्ग:- चूं क सैंधव समाज में धर्म का स्वरूप अत्यंत वक सत था। अतः संधु सभ्यता में वद्वानों ने पुजारी वर्ग की आदरणीय स्थिति की परिकल्पना की है। यहां तक संभावना व्यक्त की गई है क सैंधव सभ्यता में शासन की बागडोर पुजारियों के हाथों में थी। सैंधव शासक को पुरोहित-शासक भी कहा गया है।[12] कंतु पुरोहितों की स्थिति के पक्ष में कोई ल खत साक्ष्य उपलब्ध नहीं है। संधु सभ्यता में मंदिर संरचना की प्राप्ति की पुष्टि न होने के कारण पुजारियों के अस्तित्व एवं महत्व पर प्रश्न चन्ह लगना भी स्वाभा वक है।

दूसरी और मश्र की राजनीति में पुजारियों का काफी हस्तक्षेप रहा। शक्तिशाली फराओ (राजा) के काल में वे उसके अधीन थे। कंतु यह धर्म गुरु या पुरोहित वर्ग फराओ की शक्ति को क्षीण करने व अपनी शक्ति को बढ़ाने के लए हमेशा तत्पर रहते थे।[13] मस्र में सबसे बड़ा पुजारी फराओं स्वयं माना जाता था जो धर्म व अनुशासन पर नियंत्रण रखता था। वह धा र्मक उत्सवों की अध्यक्षता करता था। उसके अधीन सैकड़ों पुजारी होते थे।[14] अतः यह कहना उ चत होगा क मस्र की सभ्यता में पुरोहित वर्ग धर्म व राजनीति दोनों क्षेत्र में प्रभावशाली स्थान रखता था।

पशु पूजा व वृक्ष पूजा:- मश्रवासी देवी-देवताओं के अतिरिक्त अनेक पशुओं की भी पूजा करते थे। वे भेड़ और वृषभ की पूजा करते थे। भेड़ को एमनरा व वृषभ को टा: देवता मानते थे। खजूर के वृक्ष को सबसे प वत्र माना जाता था।[15] सैन्धव जनों में भी पशु पूजा व वृक्ष पूजा का वधान दिखाई देता है। सैन्धव सभ्यता की खुदाई में मटटी व प्रस्तर से बनी पशु मूर्तियाँ मली हैं और मुहरों पर भी इनका अंकन हुआ है। कई मुहरों पर एकश्रृंगी वृषभ का अंकन हुआ है, जिसके सामने संभवतः धूपदंड रखा हुआ है। अन्य पशुओं में महिष, चीता, हाथी, गैंडा, हिरण उल्लेखनीय है । कुछ मुहरों पर वृक्षों के चारों ओर वेदिका बनी मलती है। स्त्री से पीपल निकलते हुए अं कत कया गया है जिसे प्रकृति देवी माना गया है । घ ड़याल का अंकन संभवतः नदी देवता का निरूपण करता है।[16] अतः कह सकते हैं क दोनों ही सभ्यताओं में पशुओं व वृक्षों को प वत्र मान उनकी पूजा का प्रचलन था।

पशु-आदम संयुक्त मूर्तियों के रूप में चत्रण:- मस्र में गीजा के परा मड के पास एक स्फिंक्स (नर व संह की मली जुली मूर्ति) बनी हुई है। यह 25 गज ऊंची व 50 गज लंबी है। इसे प्राचीन मस्र में 'हूं' के नाम से पुकारा जाता था जिसका अर्थ है सुरक्षा का चौकीदार।[17] मस्र की सभ्यता में युद्ध की देवी की मुखाकृति संहनी जैसी मानते थे और उससे वह बहुत भयभीत रहते थे। देवी-देवताओं को आमतौर पर कसी पशु जैसे सर वाला चत्रित कया जाता था। मश्रवा सयों की मान्यता के अनुसार जल देवता का सर मगर जैसा और सूर्य देवता का सर बाज जैसा था।[18]

दूसरी और संधु सभ्यता में भी मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक मुद्रा पर दो पशुओं के सर पर पीपल की नौ पत्तियां बनाई गई है।[19] मोहनजोदड़ो से प्राप्त मुहर पर पद्मासन मुद्रा में अं कत देवता को जॉन मार्शल ने पशुपति शव का प्रारूप माना है। इसके चारों हाथी, चीता,

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 08, August 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

भैंसा, गैंडा व हिरण का अंकन है। एक मुहर में त्रिमुख देवता चौकी पर वराजमान है जिसके सर पर सींगो के बीच में से फूल अथवा पत्तियां निकलते दिखाई गई हैं। दूसरी मुहर में देवता एक मुखी है ले कन उसके सर से भी टहनी निकलते हुए दर्शाई गई है। उल्लेखनीय है क जहां मश्र की सभ्यता में पशु और मानव की संयुक्त मूर्तियां प्राप्त हुई हैं वहीं संधु सभ्यता में वृक्ष और मानव आकृतियों का संयोजन देखने को मलता है।

ओरेकल/देववाणी और दिव्यवक्ता:- ओरेकल मश्र की सभ्यता में देवता और मानव के बीच मध्यस्थ की भांति था। प्राचीन मश्रवासी अपनी दिन-प्रतिदिन की छोटी-बड़ी समस्याओं के हल देववाणी के माध्यम से प्राप्त करते थे।[20] इनमे दिव्यवक्ता के माध्यम से अपने प्रश्न का हाँ या ना में जवाब प्राप्त करते थे। फराओं द्वारा सैन्य अ भयान की अनुमति हो या कसान द्वारा कसी क्षेत्र वशेष में उपज की अनुमति या अच्छी उपज की गारंटी अथवा चोर के जुर्म कबूलने जैसे मामलों में मार्गदर्शन लेने का रिवाज था। ओरेकल की प्र स द्ध के साक्ष्य के रूप में ओरेकल डक्री मंदिरों की दीवारों पर उत्कीर्ण मली है। दूसरी और सन्धु सभ्यता में ओरेकल/दिव्यवाणी या भ वष्यवक्ता होने के प्रमाण प्राप्त नहीं हुए हैं।

धर्मग्रन्थ/ धा र्मक लेख:- मश्र में फराओं तथा संभ्रांतजन के लए नि र्मत परा मडों (समा ध स्मारकों) तथा सामान्य जन के लए नि र्मत कब्रों में वलास सामग्री, दैनिक उपयोग सामग्री के साथ-साथ अंत्येष्टि ग्रन्थ, भजन, क वताओं और आत्मकथात्मक ग्रंथो को दफनाया गया है। प्राचीन मश्रवा सयों का वश्वास था क मृत आत्मा मृत्युपरांत(afterlife) कब्र में शव के साथ दफनाये गए टेक्स्ट या पे परस पर लखी पुस्तकों को पढ़कर मनोरंजन करती थी। परा मडों में रखी गई बुक ऑफ़ डेड संर क्षत पुस्तकें है जो कब्र में रहने वाली आत्माओं के लए जीवन के बाद के मार्गदर्शक के रूप में कार्य करती हैं। धा र्मक उद्देश्यों की पूर्ति के लए परा मड ग्रन्थ, मकबरे की दीवारों पर लखे अंत्येष्टि साहित्य, ताबूतों पर उत्कीर्ण लेख, कब्रों के भीतर रखे पे परस स्क्रॉल इत्यादि में जादुई मंत्रों और गीतात्मक भजनों का उपयोग कया है।

वहीँ सन्धु घाटी सभ्यता में लेख मुख्य रूप से भाव चत्रात्मक ल प में मुहरों पर वशेष रूप से प्राप्त हुए हैं जिनका उद्देश्य व्यक्तिगत पहचान या व्यापारिक उद्देश्य से कया गया था। इनका धर्म से कोई प्रत्यक्ष सम्बन्ध प्रतीत नहीं होता। धौलावीरा में स्टे डयम के बाहर से सूचना प पर भी लेख अं कत है कन्तु इसका भी धर्म से संबंध प्रतीत नहीं होता। सन्धु सभ्यता की ल प अभी तक अपठनीय है।

फ़राओ/शासक का स्थान:- मश्र में फराओं को मानवता और देवताओं के बीच अद् वतीय दर्जा प्राप्त था। फ़राओ होरस(देवता) से जुड़ा था और उसे रा के पुत्र के रूप में देखा जाता था । मृत्यु के उपरांत फ़राओ को पूर्णतः देवता का दर्जा दिया। उसे मृत्यु व पुनर्जन्म के देवता ओ सरिस के साथ जोड़ दिया गया।[21] वस्तुतः मश्र की प्राचीन धा र्मक प्रथा फ़राओ या शासक पर केन्द्रित थी। वहीँ दूसरी ओर सन्धु घाटी सभ्यता में अभी तक

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 08, August 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

शासक के संबंध में स्पष्ट प्रमाण प्राप्त नहीं होते हैं। कुछ इतिहासकारों ने पुजारी वर्ग को शासक के रूप में स्वीकार है परन्तु यह मत पूर्णतः प्रमा णत नहीं है । अतः सन्धु सभ्यता में शासक के धर्म पर प्रभाव के संबंध में स्पष्तः कहा नहीं जा सकता।

धर्म प्रारंभ से ही मानव सभ्यता के आधारभूत प्रेरक तत्वों में से एक रहा है। धर्म के माध्यम से मानव न केवल समुदायों के रूप में संगठित हो व भन्न प्राकृतिक व पर्यावरणीय बाधाओं का सामना करने में सफल रहा है। अ पतु धर्मजन्य अवरोधों ने उसकी वच्छृंखल और पाश्विक प्रवृत्तियों पर भी रोक का कार्य कया है। सभ्यताओं के प्रारंभ से लेकर वर्तमान तक धा र्मक परंपराएं, मान्यताएं व वश्वास कसी भी समुदाय के आधारभूत मूल्यों को प्रकट करते हैं। सभी सभ्यताओं में प्रकृति की चमत्कारिक शक्तियों चाहे वे सृजनकारी हो या वध्वंसकारी, के प्रति वस्मय और् भय का भाव प्रकट हुआ है, जिसने कालांतर में प्रकृति के दैवीकरण का रूप ग्रहण कर लया। सूर्य, पृथ्वी, चंद्रमा, व भन्न नक्षत्र, नदी, जल, आकाश, पर्वत, वायु इत्यादि सभी प्राकृतिक शक्तियों का दैवीकरण और मानवीकरण कया गया। हालां क मस्र व हड़प्पा दोनों सभ्यताओं में उन्हें अलग-अलग नाम व स्वरूपों में पूजा जाने लगा। दोनों ही सभ्यताएं बहुदेववादी थी, हालां क मस्र में फराओ अमेनहोतेप के एटनवाद में एकेश्वरवादी दर्शन दिखाई देता है, वही संधु सभ्यता में योगी की मूर्ति से श्रमण परंपरा के प्रारं भक चह्न दृष्टव्य होते हैं।

कहा जा सकता है क दोनों सभ्यताएं समकालीन होने के बावजूद जहां दोनों की धा र्मक मान्यताओं में मूलभूत समानता नजर आती है वही स्थान, परिस्थितियों व आवश्यकता में भन्नता के अनुरूप दोनों धर्म अपनी व शष्टता लए हुए हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ:

I. भारत का इतिहास:डॉ. कृष्णगोपाल शर्मा, हुकुम चंद जैन, डॉ. मुरारी लाल शर्मा, अजमेर बुक कम्पनी, जयपुर, पृष्ठ 8
II. वश्व का इतिहास, हरिशंकर शर्मा, म लक एंड कंपनी प्रकाशन, जयपुर, पृष्ठ 12
III. वही, पृष्ठ 12
IV. भारतीय संस्कृति के मूल आधार, शर्मा-व्यास, पंचशील प्रकाशन जयपुर, पृष्ठ 24-25
V. वश्व की प्राचीन सभ्यताएं, सतीश कुमार मश्रा, डॉ. दयाराम यादव, श्री नटराज प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ 107
VI. वश्व की प्राचीन सभ्यताएं, डॉ. एस. एल. नागोरी, पृष्ठ 331
VII. प्राचीन सभ्यताएं, ने मशरण मत्तल, रिसर्च पब्लिकेशन, जयपुर, पृष्ठ 37
VIII. वश्व की प्राचीन सभ्यताएं, गरीश कुमार संह, महेंद्र बुक कंपनी, नई दिल्ली, पृष्ठ 29
IX. वश्व का इतिहास, शर्मा, जैन, शर्मा, अजमेर बुक कम्पनी, जयपुर, पृष्ठ 79

X. Burial Customs in Ancient India, S.P. Gupt, Journal of the Bihar Research Society P. 88

XI. अमर उजाला, नई दिल्ली, **29** नवंबर **2019**

XII. प्राचीन भारतीय समाज एवं अर्थव्यवस्था, जी. एस. पी. मश्र, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर

XIII. वश्व की प्राचीन सभ्यताएं, सतीश कुमार मश्रा, डॉ. दयाराम यादव, श्री नटराज प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ **108**

XIV. वश्व की प्राचीन सभ्यताएं, डॉ. एस. एल. नागोरी, पृष्ठ **50**

XV. वश्व का इतिहास, प्रथम भाग, रीता संह, एस. चंद एंड कंपनी, रामनगर, नई दिल्ली, पृष्ठ **71**

XVI. वही, पृष्ठ **34**

XVII. वश्व की प्राचीन सभ्यताएं, डॉ. एस. एल. नागोरी, पृष्ठ **31**

XVIII. वश्व का इतिहास, हरिशंकर शर्मा, म लक एंड कंपनी प्रकाशन, जयपुर, पृष्ठ **25**

XIX. वश्व का इतिहास, प्रथम भाग, रीता संह, एस. चंद एंड कंपनी, रामनगर, नई दिल्ली, पृष्ठ **18**

XX. Oracles in Ancient Egypt, Alyward M. Blackman,The Journal of Egyptian Archaeology, Vol. 11, NO. ¾ (Oct.,1925), Sage Publications Ltd.

XXI. https://www.nationalgeographic.org/encyclopedia/pharaohs